राज
कॉमिक्स
विशेषांक
संख्या -0202
मृत्युदंड
नागराज
DOGA YEAR
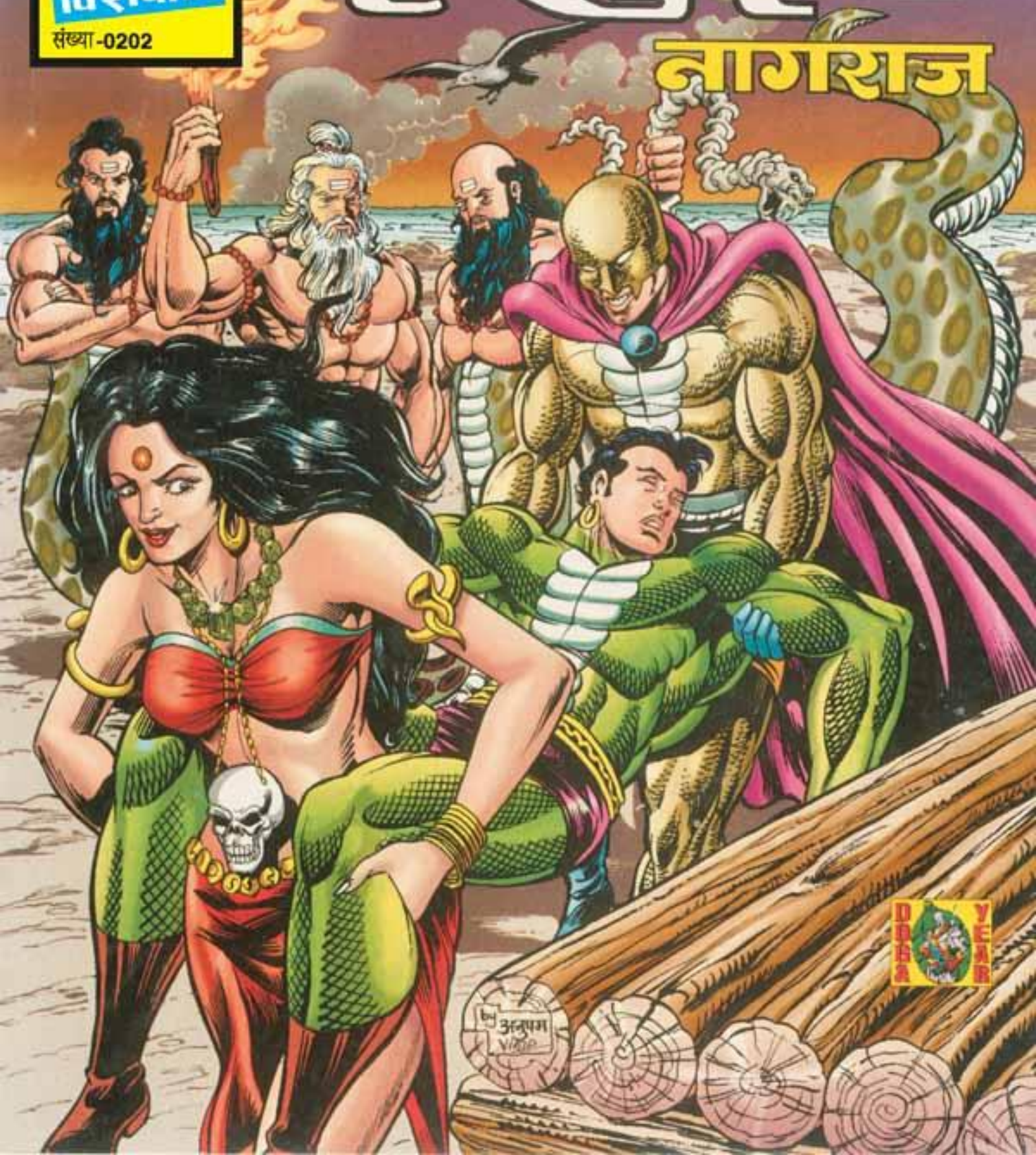
हर जीवित वस्तु के लिए मौत एक खौफ है! मरना कोई भी नहीं चाहता! लेकिन मौत का महत्त्व कोई उससे पूछे, जिसने अमृत पिया हुआ है। जो चाहकर भी मर नहीं सकता! और जो रो-रोकर मांगता है तो सिर्फ...
मृत्युदंड
संजय गुप्ता पेश करते हैं
कथा: जॉली सिन्हा.
चित्र: अनुपम सिन्हा.
इंकिंग: कांबले, विनोद
सुलेख एवं रंग संयोजन: सुनील पाण्डेय.
सम्पादक: मनीष गुप्ता.

ईऽऽप
झऽऽऽऽस

ईफक

गुरुदेव! श्रीमान नागपाशा को फिर से अवसाद का दौरा पड़ा है! वे आत्महत्या करने की चेष्टा कर रहे हैं!
अस्तीय कुंड में कूद कर!

फिर से? ओफ़!
खजाना हाथ से निकलने के बाद यह इसकी आत्महत्या करने की बारहवीं कोशिश है!

असरता मेरे लिए अभिशाप बन गई है। मेरी जिन्दगी का एक ही मकसद था! हमारे राज-खजाने की प्राप्ति! लेकिन उसमें मैं दो बार विफल हो गया! एक बार खजाना मेरी नाक के नीचे से निकाल लिया गया, और दूसरी बार नागराज ने मुझे मात दे दी। अब असफलता का सेहरा अपने सिर पर बांधकर मुझे नहीं जीना है! मुझे मृत्यु का तरीका बताइए गुरुदेव! मौत दीजिए मुझे! मौत!

बकवास बन्द कर, नागपाश!

नागपाशा के बारे में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें शाकूरा का चक्रव्यूह, नागराज का अंत, जहर, खजाना एवं नागपाशा

इस संबंध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें खजाना

नहीं ! समय की तीनों धाराओं पर राज ! भूत-काल, वर्तमान और भविष्य !
तीनों कालों पर हमारा राज होगा ! लेकिन सिर्फ तब जब मणियां हमारे पास होंगी !
होंगी, गुरुदेव, होंगी ! आपने यह बताकर मेरा अवसाद दूर कर दिया है !
अब हम पांडुलिपि और मणियां हासिल करेंगे और जरूर करेंगे !
आप पता कीजिए कि खजाना इस वक्त कहां पर है ! क्योंकि जहां पर खजाना होगा, वहीं पर नागराज भी होगा, और वेदाचार्य भी !
ठीक है ! तुम अपनी शक्तियों को एकत्रित करो, और मैं अपनी शक्तियों को इकट्ठा करता हूं !
नागराज- आतंकवाद का दुश्मन ! एक ऐसा अनोखा मानव नाग, जिसे नफरत थी तो सिर्फ अपराध और आतंकवाद से-
और आज भी उसका फर्ज उसे याद कर रहा था-
कुछ आतंकवादियों ने उस विमान का अपहरण कर लिया है नागराज !
वे पचास करोड़ रुपए और जेल में बंद कुछ आतंकवादियों की रिहाई की मांग कर रहे हैं !

विमान में करीब पचास यात्री हैं। अधिकतर औरतें व बच्चे हैं। आतंकवादियों ने आधे घंटे की मोहलत दी है, और उनकी अवधि बीत जाने पर हर पांच मिनट में एक बच्चे को मार डालने की धमकी भी दी है!
असहायों की जान में नागराज की जान रहती है, भारती! इसे लेना इतना आसान नहीं है। मैं पकड़ूंगा इन आतंकवादियों को!
लेकिन तुमको प्लेन के पास आते देखकर ही वे आतंकवादी, यात्रियों को मारना शुरू कर देंगे!

वे मुझे नहीं देख पाएंगे, कमिश्नर साहब!
क्योंकि मैं जमीन के अंदर-अंदर जाऊंगा!
अपनी सर्प सुरंग के रास्ते से!

अब मैं ठीक प्लेन के नीचे पहुंच चुका हूं!

कुछ ही पलों बाद-

नागराज, प्लेन का दरवाजा खटखटा रहा था-
खट खट

अंदर बैठे आतंकवादी चौंक उठे-
ये खट-खट कैसी हो रही है? कहीं ये मिलट्री या पुलिस वालों की चाल तो नहीं है?
मैं तो लगातार बाहर नजर रख रहा हूं। न तो इधर से कोई आया, और न ही उधर से! कोई चिड़िया होगी!
खट खट
NO ENTRY
चिड़िया कहीं ऐसे खटखटाती है?
ये तो कुछ और ही है!
क्यूं डर रहा है, यार?

ये कमीने पुलिस वाले हमको डरपोक समझते हैं क्या? मैं दरवाजा खोलता हूं, अगर कोई गड़बड़ हुई तो तू अब्दुल और गफूर के साथ यात्रियों को गोली मारना शुरू कर देना!
बॉस क्या कहेगा?
कुछ नहीं कहेगा! और वैसे भी फिलहाल तो मैं ही बॉस हूं!

दरवाजा खुला-
देखा! बाहर तो कुछ भी नहीं था। खामख्वाह ही डरा दिया!

मैं तो पहले ही कह रहा था कि प्लेन के पास कोई आया ही नहीं!
ओए, अब्दुल, गफूर! सब ठीक है। चिन्ता न करो!
दरवाजा बंद होने के साथ-साथ-

दोनों की आंखें भी बंद हो चुकी थीं-

यात्रियों पर नजर रखे हुए, अब्दुल और गफूर चौंक उठे-
ये 'भम्म्' की आवाज कैसी थी?

तुम्हारे साथियों की खोपड़ियां टूटने की आवाज थी!
ना... ना... नागराज! आ...आगे मत आना। वर्ना... वर्ना मैं इस बच्चे को गोली मार दूंगा!
मार! चला गोली!...

... देखते हैं कि बच्चे तक पहले तेरी गोली पहुंचती है... या मेरा सांप!
नहींsssss

धड़ाक
अब तेरी बारी है!
बॉस, बॉस! नागराज आ गया है। भाग लो! भाग लो!

चौथा आतंकवादी 'कार्गो होल्ड' की तरफ भागा है! सामान रखने वाली जगह की तरफ! यानी इनका कोई बॉस भी है, जो इस वक्त कार्गो होल्ड में मौजूद है!
CARGO HOLD
कार्गो होल्ड में—
बॉस, बॉस! अब कुछ नहीं हो सकता! नागराज आ गया है!
अब भाग लो यहां से! सिर पर पैर रखकर!
महानगर में अपराध करेगा तो तुझे नागराज नहीं तो क्या सुपरमैन रोकने आएगा!
ये सारा नाटक उसी को बुलाने के लिए ही तो रचा गया था! ताकि वह खुद मेरे पास आ जाए और मुझे उसे ढूंढ़ने के लिए मारा-मारा न फिरना पड़े!
तेरा काम खत्म हुआ! अब तू भी खत्म होजा!
यानी... यह एक जाल है! एक सोचा समझा हुआ षड्यंत्र!
कौन हो तुम? और मुझे मारना क्यों चाहते हो?
मैं तो सिर्फ एक सेवक हूं, नागराज!

और तुझे क्यों मारना है, यह तो वही जाने, जिसने मुझे तंत्र-शक्ति से पैदा किया है। खूनखोर को तो सिर्फ एक ही बात पता है!...
...कि उसे तेरी जान चाहिए!
आऽऽऽऽऽऽऽ ह!
लेकिन तुझे तंत्र-शक्ति से बनाने वाला मेरा दुश्मन है कौन, खूनखोर!
हम तंत्र मानवों को यह बताने की इजाजत नहीं होती है नागराज!

तड़ाक

कोई बात नहीं! जब तू मरने लगेगा, तो अपने आपको बनाने वाले को जरूर कोसेगा! तब मुझे उसका नाम खुद-ब खुद पता चल जाएगा!

ओफ! तेरी ये विष फुंकार!

तुझसे खुली जगह पर लड़ना पड़ेगा, नागराज! जहां पर तेरी ये विष फुंकार बिखरकर रह जाएगी!

अरे, नागराज! और वह किसी अजीब से प्राणी से लड़ रहा है? क्या यही है विमान का अपहरण-कर्ता?

ये उनका बॉस है!

अपहरण-कर्ता तो बेचारे बेहोश पड़े हुए हैं!

अब सभी तेरी मौत का नज़ारा देखेंगे, नागराज! और तेरी भयानक मौत देखकर वे सभी अपने-आप मेरे सामने घुटने टेक देंगे!
वर्ना ये अजगर की कुंडली से भी ज्यादा शक्तिशाली शिकंजा मेरी जान... अरे! म... मैं इच्छाधारी कणों में नहीं बदल पा रहा हूं!
जरूर इसकी तांत्रिक शक्ति मेरी इच्छाधारी शक्ति को रोक रही है! ऐसी विचित्र तांत्रिक शक्ति रखने वाला भला कौन हो सकता है?
आऽऽऽह! इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करना होगा!
अब बचने का दूसरा रास्ता निकालना होगा!...
...कहते हैं कि हमला ही सबसे अच्छी बचाव नीति है!
इसलिए अब मुझे हमला करना होगा!
तड़ाक

अब तू जिन्दा नहीं बचेगा खूनखोर ! तुझे मैं सिर्फ एक ही शर्त पर जिन्दा छोड़ूंगा, मुझे उस तंत्र- साधक का नाम बता दे, जिसने तुझे बनाकर मुझे मारने के लिए भेजा है !
यह तू मुझसे कभी नहीं जान पाएगा, नागराज !
तो फिर तुझे बिना नाम बताए ही मरना होगा, शैतान !
खटाक
गर्दन कटने से तंत्र- मानव नहीं मरा करते, नागराज ! ऐसे तुझ जैसे साधारण मानव मरते हैं !
घचपच
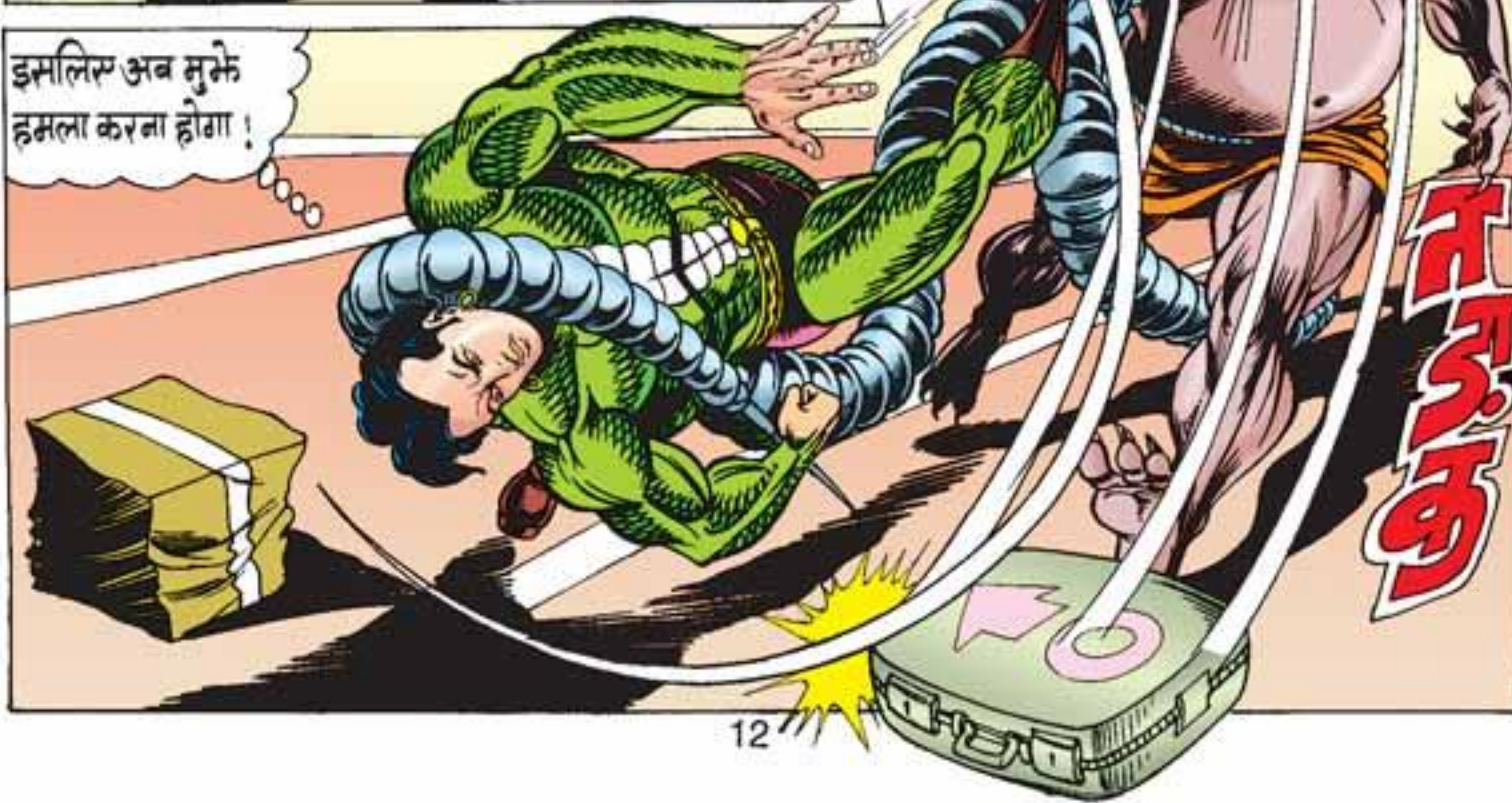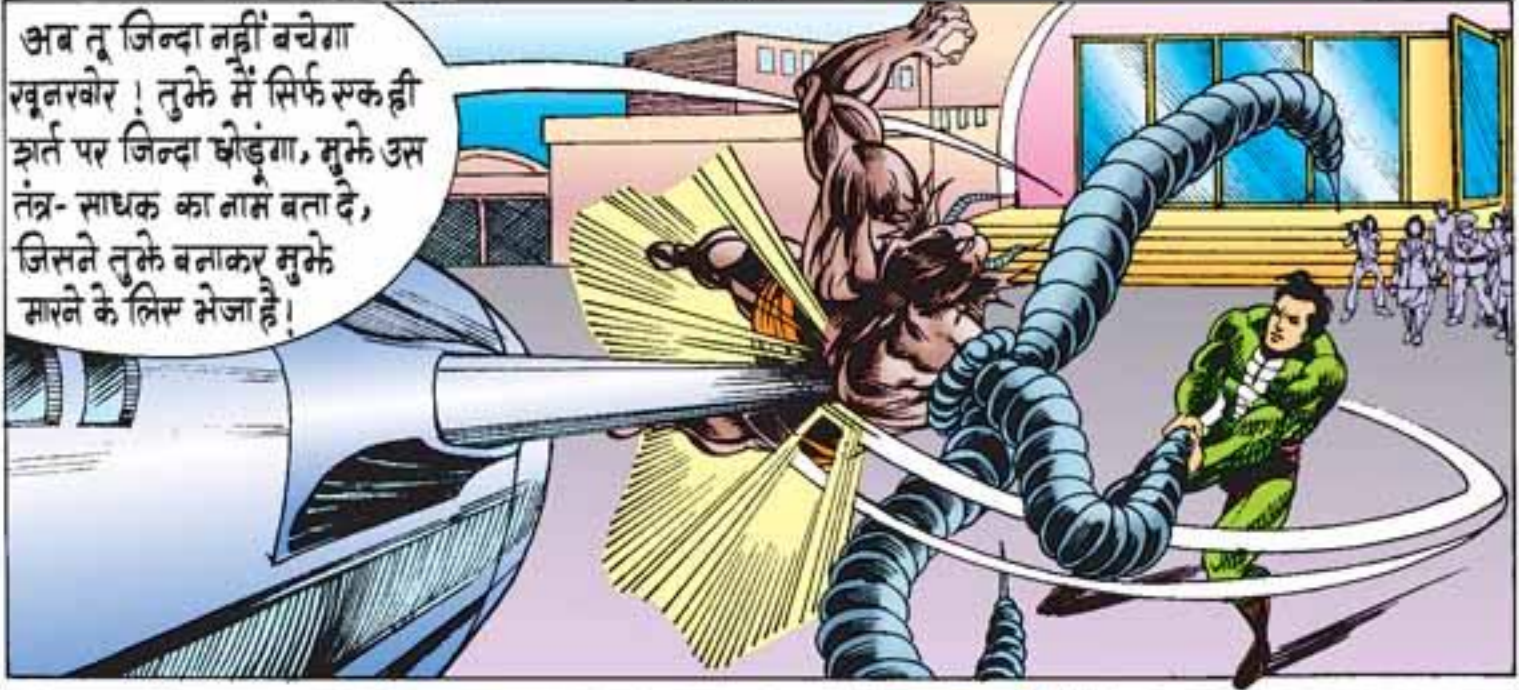
अब तक मैंने तेरी शक्ति की परख लिया है नागराज! इसलिए अब इस खेल को लम्बा खींचने का कोई मतलब नहीं है! ...
...अब तुझे लम्बा खींचेगा खून खोर!
सुई जैसे नुकीले छोर, नागराज के शरीर में आ धंसे—
आऽऽऽऽऽह
और नागराज चीख उठा—
ओह! नागराज मुसीबत में है। वह तंत्र मानव उसे बेबस कर रहा है। ओफ़! आज मैं कोई तंत्र लेकर साथ क्यों नहीं आई! नागराज को बचाना होगा! बचाना होगा!
शूट हिम, कमिश्नर साहब! किल हिम!

जवानो! टेक ऐम.. एंड फायर!
तड़ तड़ तड़ तड़ तड़ तड़ड़ड़

गोलियों के धक्के ने खूनखोर को पीछे धकेल दिया! नागराज आजाद हो गया-
लेकिन इससे पहले कि नागराज अपने-आपको संभाल पाता-
धप्प खच्च

उसकी आंखों के सामने-

पहले तो पुलिस वाले बेबस हो गए-

और फिर नागराज दुबारा तड़प उठा-

नागराज के शरीर में अभी भी इतनी जान बाकी थी कि वह 'सर्प-रस्सी' को छोड़ कर भागते प्लेन में फंसा सके-

और नागराज की इस हरकत का मतलब समझ पाते से पहले ही नागरस्सी का दूसरा सिरा खून-खोर के पैर से लिपट चुका था-

कहानी 19 पेज से जारी
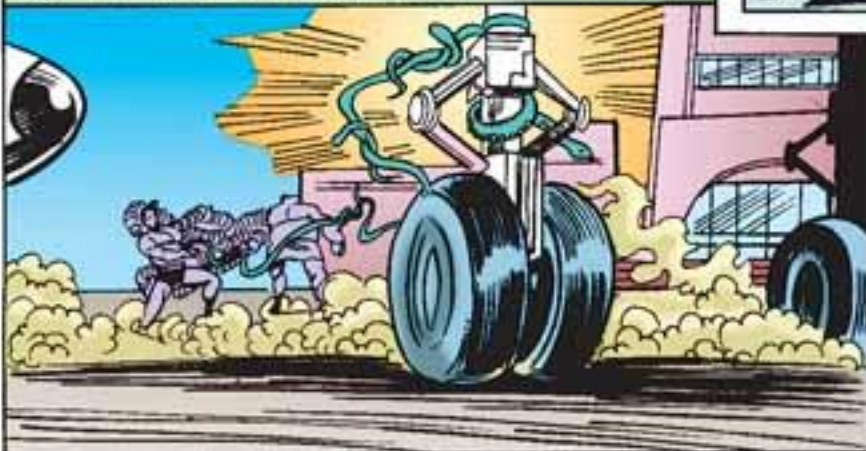
और अगले ही पल- एक झटके के साथ नागराज के शरीर में धंसी खोखली सुइयां निकल चुकी थीं-
और प्लेन से लटका खूनखोर हवा में ऊंचाईयां नाप रहा था-
घबरा मत, खूनखोर! तू ज्यादा देर तक प्लेन से लटका नहीं रहेगा!
जब प्लेन ज्यादा ऊंचाई पर पहुंचेगा तो मेरी सांप रस्सी, अत्यधिक ठंड के कारण अपने आप टूट जाएगी, और अगर तब तक तू ठंड से न मर गया...
... तो गिरकर जरूर मरेगा!
कडाक
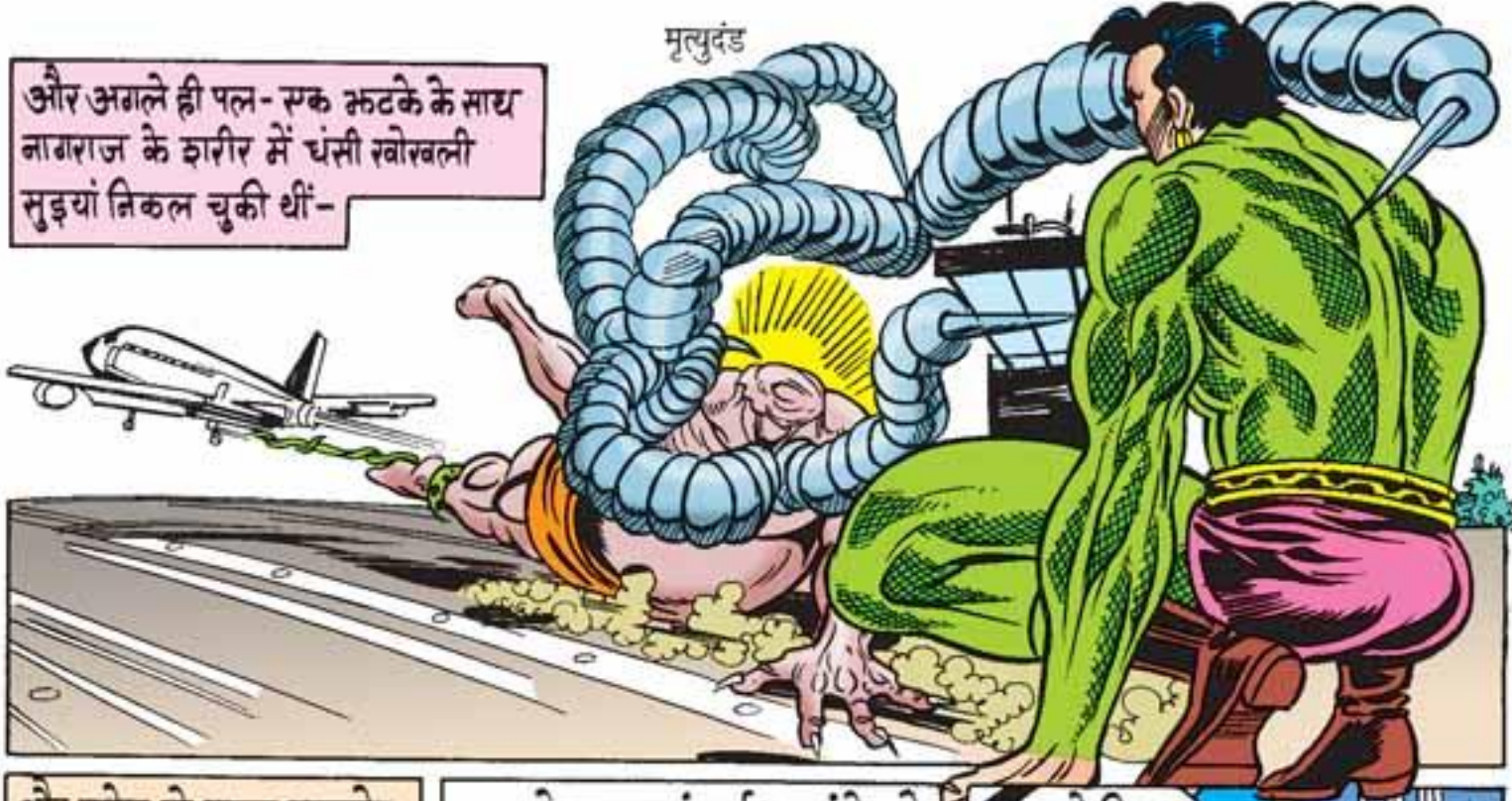
इस सम्बन्ध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें खजाना

तू तो एक तांत्रिका है, नगीना! तुझे धन से क्या काम?

मैं एक नागिन भी हूं, गरलगंट। नागों को धन से गर्मी आती है, और यह गर्मी हमको शक्ति देती है! वर्ना हम नाग मूर्ख नहीं होते हैं जो खजानों पर कुंडली मारकर बैठे रहते हैं!

समझ गया! तू नागराज को मारने की शक्ति चाहती है। ऐसी ही शक्ति हमसे नागद्वीप के राजतांत्रिक विषंधर ने भी मांगी थी!

...लेकिन वह असफल रहा! तुझे भी ऐसी शक्ति दूं क्या?

नहीं, देव! ऐसा प्रयास मैं कर चुकी हूं! नागराज को मारने की कोशिश करनी मूर्खता है। मुझे उसको गुलाम बनाने की शक्ति दीजिए। ऐसी शक्ति जिससे नागराज तो क्या, कालदूत तक मेरा गुलाम बन जाए!

इस सम्बन्ध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें **विषकन्या**

बुद्धिमता वाला वरदान मांगा है तूने नगीना! ले! मैं तुझको ये अंकुश प्रदान करता हूं!
वह अंकुश जिससे हाथी तक को सधाया जाता है। इस तांत्रिक अंकुश से कई अंकुश पैदा होते हैं। और वे अंकुश जिसके शरीर में धंस जाएंगे, वह तेरा गुलाम बन जाएगा!
तेरी इच्छा पूर्ण हुई! अब हम चलते हैं!
एक पल रुकिए, गरलगंट! पहले यह देख तो लूं कि यह अंकुश सचमुच काम करता है या नहीं!
इस निर्जन द्वीप में तुझको छोटे-मोटे जीवों के अलावा और कोई प्राणी नहीं मिलेगा नगीना! उन पर इस अंकुश का प्रयोग करने का भला क्या लाभ होगा?
मैं उन पर नहीं...
...तुम पर इस अंकुश का प्रयोग करूंगी, गरलगंट! बताओ, अब तुम मेरे गुलाम हो या नहीं?
हां, स्वामिनी! मैं आपका गुलाम हूं!
हा हा हा! तुम अपने ही वरदान से बंध गए हो, गरलगंट!
अब तुम मेरे साथ महानगर चलोगे, और मेरे लिए खजाना हासिल करोगे!

नगीना का खजाना प्राप्त करने का मकसद था-
इच्छाधारी नागों के उस द्वीप नागमणि द्वीप पर राज करना, जिसको कुछ लोग नागद्वीप भी कहते थे-
नागद्वीप में आज का वातावरण थोड़ा सा गमगीन था। क्योंकि-
आज तुम्हारे पिता मणिराज सर्प की चौथी बरसी है, विसर्पी! और पिछले चार बरसों से उनकी अस्थियां और भस्म उनकी इस समाधि पर ही रखी हुई हैं! क्योंकि नागद्वीप के नियमों के अनुसार जब तक उचित उत्तराधिकारी शासन को संभाल न ले, तब तक पूर्व- राजा की भस्म को सागर देव के सुपुर्द नहीं किया जाता! तुम अभी तक कार्यकारी शासक के रूप में राज का कार्य भार संभाल रही हो! लेकिन तुम विवाह करके नागद्वीप को एक शासक दे सकती हो। जब तक तुम ऐसा नहीं करोगी, तब तक तुम्हारे पिता की आत्मा को शान्ति नहीं मिलेगी, पुत्री!

इस सम्बन्ध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें फन

दंशाक, एक अति शक्तिशाली जुझारू नाग था! आज तक उसे कोई युद्ध में परास्त नहीं कर सका था-
लेकिन नागार्जुन, सिंहनाग, सर्पराज एवं नागप्रेती वही करने की कोशिश कर रहे थे-
मुझे रोकने की कोशिश करनी छोड़कर मेरा साथ दे नागार्जुन! नागद्वीप को एक शासक की जरूरत है!
और नागमणि द्वीप को मुझसे ज्यादा शक्तिशाली शासक मिल ही नहीं सकता!
यह फैसला करना राजपरिवार का हक है दंशाक! या फिर नागद्वीप की जनता का! तुम्हारा नहीं!
तो फिर पहले तुम सब खत्म होगे। फिर कुमारी विसर्पी के साथ राजपरिवार खत्म होगा! और फिर मेरी इच्छा के विरुद्ध जाने वाला हर नाग नष्ट होगा! दंशाक के अलावा नागमणि द्वीप का शासक और कोई नहीं बन सकता!
नागार्जुन के घातक तीरों को अपने शरीर से खींचकर-
दंशाक ने उनका वार नागार्जुन पर ही कर दिया-
आााह
एक कराह के साथ नागार्जुन नीचे आ गिरा-

नागार्जुन को घायल करके तू यह मत समझना कि अब तू महल में घुसकर सिंहासन पर कब्जा करने में सफल हो जाएगा! सिंहनाग के रहते ऐसा कभी नहीं होगा!
तड़ाक
अगर ऐसा है तो फिर तू रहेगा ही नहीं सिंह-नाग!
जब तक तू इस चक्र की कैद से आजाद होगा, तब तक मैं महल के अंदर प्रवेश कर चुका होऊंगा!
सर्पराज! नागप्रेती! इसे रोको!
खांग
खांग
मैं दंशाक के सैनिकों से निपटता हूं, नागप्रेती! तुम दंशाक के पीछे जाओ!
वह जरूर राजदंड लेने महल के अंदर जा रहा है! राजदंड हाथ में आते ही वह उसकी 'मंत्र शक्ति' का प्रयोग नाग-द्वीप की जनता पर करेगा!
दंशाक महल के हर गलियारे से अच्छी तरह से वाकिफ था-
आहा! वह रहा राजदंड! मेरी नजर के सामने ऽऽऽऽ
सिर्फ तेरी नजरें ही राजदंड तक पहुंच सकती हैं, दंशाक!
तेरे हाथ नहीं!

नागप्रेती ! तो अब तू मुझे खाने आया है !
हां ! नागप्रेती तेरा स्वाद चखना चाहता है दंशाक !
जरा देखूं तो कि विद्रोही नाग का स्वाद भला कैसा होता है ! और तू तो जानता ही है कि नागप्रेती एक बार जिसको खाना शुरू कर दे, फिर उसको पूरा खाए बगैर रुक ही नहीं सकता !
तो खाता रह ! मैं इस हाथ को अपने शरीर से ही अलग कर देता हूं !
खच्च
और फिर तेरे सिर को तेरे शरीर से अलग करूंगा !
वार प्रचंड था ! नागप्रेती का सिर तो धड़ से अलग नहीं हो पाया, लेकिन दिमाग से होश जरूर अलग हो गया ! नागप्रेती बेहोश हो गया था—
धाड़
अब यह राजदंड मेरा है ! दंशाक का, सिर्फ दंशाक का ! अरे ! इसे मैं उठा क्यों नहीं पा रहा हूं !
मैं तो बहुत शक्तिशाली हूं ! फिर भी ये हिल तक नहीं रहा है !
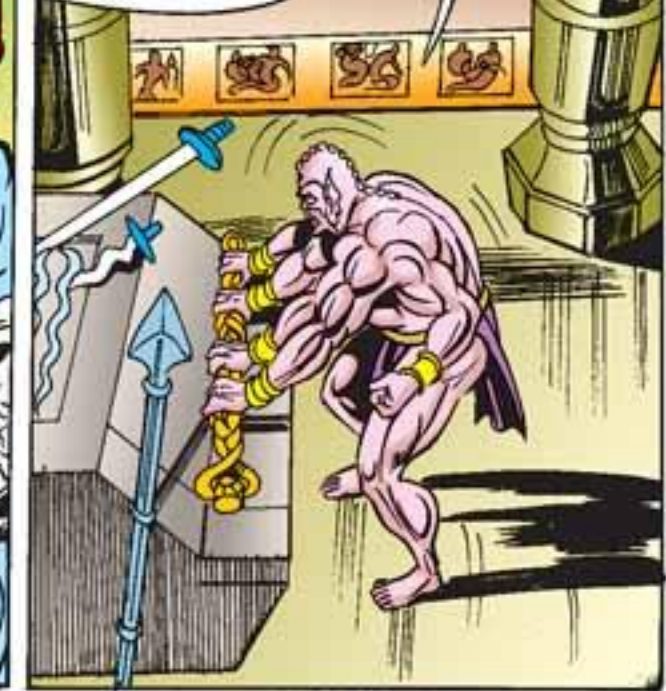
यह दंड तुझसे नहीं हिलेगा, दंशाक! तेरे जैसे दस मिलकर भी ताकत लगाएं तो भी नहीं हिलेगा!

कड़ाक!

क्योंकि यह राजदंड राजपरिवार के हाथों को पहचानता है! या फिर उस हाथ को पहचानेगा, जिसे नागरिक राज करने की अनुमति देंगे! तेरे हाथ इन दोनों में से किसी भी प्रकार के नहीं हैं!

कुमारी विसर्पी!

हां, मैं! अगर मैं चाहूं तो अभी इस राजदण्ड की मंत्र शक्ति से तुझे जमीन पर घुटने टेकने को मजबूर कर सकती हूं! लेकिन नहीं!

मुझे तेरा उदाहरण बनाकर, उन विद्रोही नागों के सामने पेश करना है, जो राजपरिवार को कमजोर समझते हैं!

आज वे सभी देख लेंगे कि राज की बागडोर एक स्त्री के हाथों में जरूर है...

...लेकिन कमजोर हाथों में नहीं है!

रुक जा, विसर्पी ! मेरे धैर्य का इम्तहान मत ले ! वर्ना दुनिया वाले कहेंगे कि दंशाक ने एक स्त्री पर हाथ उठाया था !
अपने झूठे उसूलों की आड़ में अपनी कायरता मत छिपा दंशाक ! अगर पिटने का डर है तो मुझसे माफी मांग ले ! मैं तेरी जान बख्श दूंगी !
माफी ! दंशाक माफी देता है, मांगता नहीं ! अब तू मुझे दोष मत देना कि मैंने तेरी जान ले ली !
मैं वह राजकुमारी नहीं हूं, दंशाक, जो फूलों के बिस्तर पर सोती रहती हैं। मेरी परवरिश, कांटों के बीच में हुई है। पिताजी ने मुझमें और भइया विषप्रिय में कभी भेद नहीं किया !
मुझे भी वे सारी युद्ध कलाएं सिखाई गई हैं, जो एक राजकुमार को सिखाई जाती हैं ! और वे कलाएं तेरे जैसे विद्रोही का सिर कुचलने को काफी हैं !
माफी, कुमारी विसर्पी ! मुझे... मुझे माफी दे दो ! जान बख्श दो मेरी !
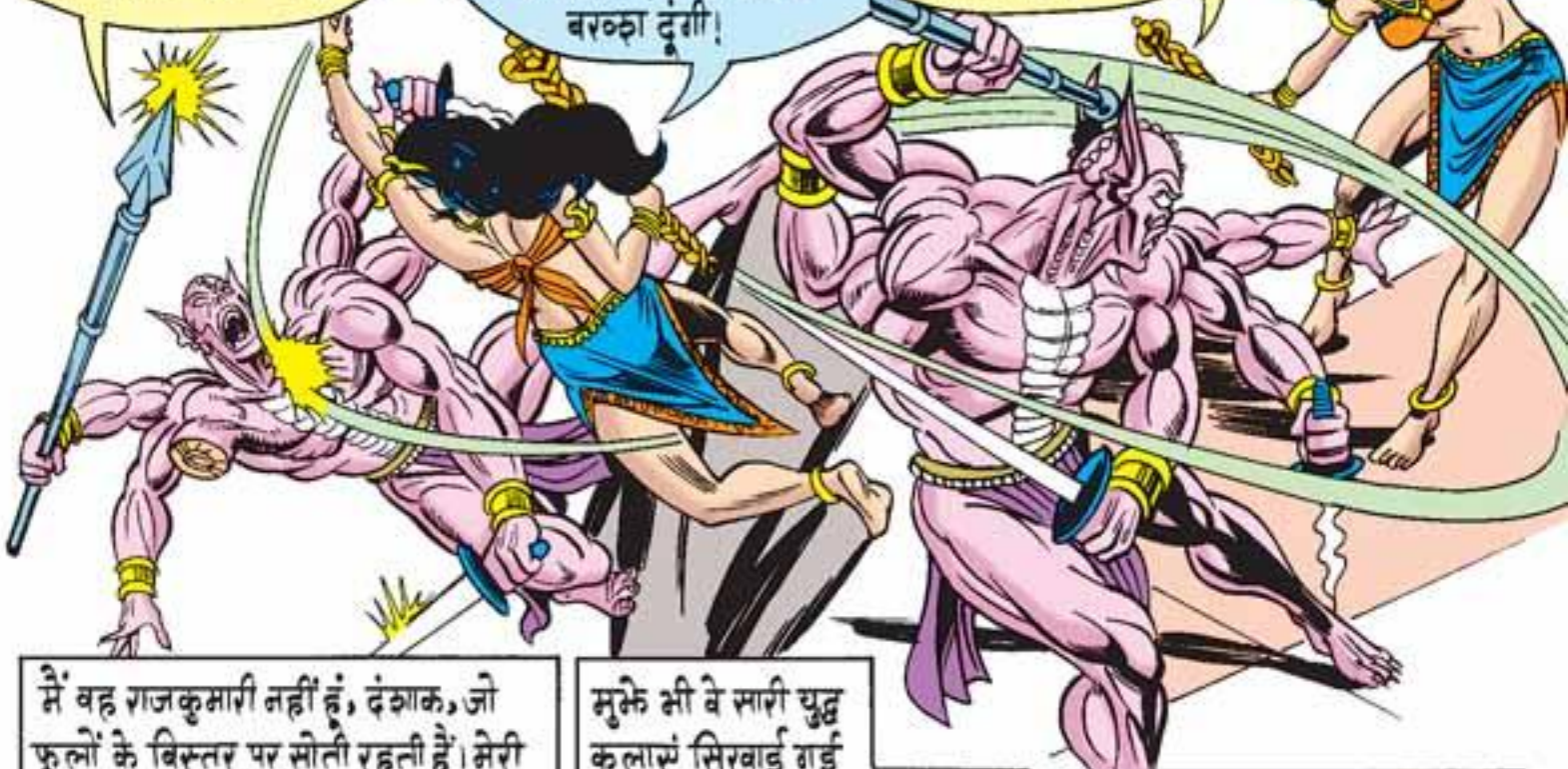
माफी नागद्वीप की प्रजा से मांग! और अपने विद्रोही साथियों से आत्मसमर्पण करने को कह!
आत्मसमर्पण करने को कोई बचा ही नहीं है राजकुमारी!
विद्रोहियों को कुचल दिया गया है!
और दंशाक को आपने कुचल दिया है!
कुमारी विसर्पी की जय हो!
हम तुम्हारी क्षमताओं से अत्यंत प्रसन्न हुए विसर्पी! तुमने अपनी शक्ति तो दिखा दी! लेकिन मणिराज के वंश को अब आगे बढ़ाना भी तुम्हारी ही जिम्मेदारी है! अपना यह फर्ज भूल मत जाना!
नहीं, भूलूंगी, महात्मन्!
मुझे सिर्फ उचित समय का इंतजार है!...
"उस समय का जब नागराज नागद्वीप का सिंहासन संभालने को राजी हो जाएगा —"
नागराज, आज मैं तुमसे एक खास बात कहना चाहता हूं! एयरपोर्ट पर उस खूनखोर को तुमने खत्म तो कर दिया, लेकिन यह भी सत्य है कि उसने तुमको मृत्यु के द्वार तक पहुंचा दिया था!
और भगवान न करे कि अगर ऐसा हो जाता तो तक्षकराज के कुल का नाम तुम्हारे साथ ही खत्म हो जाता!
आप ठीक कह रहे हैं दादा वेदाचार्य! इस तरफ तो मेरा ध्यान कभी गया ही नहीं...
लेकिन सिर्फ मृत्यु के डर से मैं अपराध और आतंकवाद को खत्म करने से पीछे नहीं हट सकता!

इस सम्बन्ध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें क्राइम किंग

नागराज के जाने के थोड़ी ही देर बाद उसके बंगले के बाहर–
मेरा यंत्र गलत संकेत नहीं दे सकता! पांडुलिपि यहीं पर है!... लेकिन ये मकान साधारण नहीं है!
आम इंसान को देखने से तो यह एक साधारण निवास लगेगा! लेकिन यह एक जटिल तिलिस्म है! इसका निर्माण अवश्य ही वेदाचार्य ने किया है!
और इसमें ऐसे घुसना अपनी मौत को आप बुलावा देना है! मुझे खास इंतजाम करना होगा!
गुरुदेव की उंगलियां अपने ही शरीर की खाल में घुसकर उसको उधेड़ने लगीं–
और फिर उस खाल पर एक खास 'रसायन मिश्रण' के गिरते ही–
उस उधड़ी खाल की कोशिकाएं आश्चर्य जनक गति से
बढ़ कर एक मानवीय आकार लेने लगीं–
कुड़.
कड़ड़ंक
अब मेरा प्रतिरूप 'नरखाल' पहले इस निवास में घुसेगा! और मैं जाऊंगा इसके पीछे-पीछे!

अनधिकृत प्रवेश की कोशिश करते ही- उस अद्भुत बंगले में कहीं पर खतरे के संकेत आने लगे-

लेकिन हमेशा इस कक्ष पर नजर रखने वाले वेदाचार्य, आज पांडुलिपि में डूबे हुए थे-
और तब सम्राट अजराज ने उस दुश्मन देश पर चढ़ाई कर दी, जो उनके राज्य के टुकड़े करने की कोशिश कर रहा था।
एक पल रुको भारती! सम्राट अजराज कौन थे, और यह घटना कब की है?
अजराज तक्षकराज के चौंतीसवें पूर्वज थे। और यह घटना लगभग तीन हजार वर्ष पहले की है!
आने वाले खतरे की सूचना वेदाचार्य तक पहुंच नहीं पा रही थी-

गुरुदेव और तरवाल बंगले में प्रवेश करने ही वाले थे-
ओह, अद्भुत! इस मूर्ति को तिलिस्म का प्रहरी बनाया गया है! मुझे इससे बचकर निकलना होगा!

तरवाल को कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा! क्योंकि उसकी कोशिकाएं फिर से बढ़कर उसके सिर का निर्माण कर देंगी!
और कटा हुआ सिर गलकर पानी बन जाएगा!
दरवाजे में पहले इसी को अन्दर जाने दूं!

अन्दर घुसने के लिए दरवाजा खोलते ही गुरुदेव को चकित हो जाना पड़ा-
अरे! यहां से तो अनेक सीढ़ियां ऊपर की तरफ जा रही हैं!

इनमें से सिर्फ एक सीढ़ी, आगे के रास्ते पर ले जाएगी ! बाकी सारी नर्क जाने का रास्ता दिखाएंगी ! पर वो सीढ़ी हो कौन सी सकती है ?
खैर ! तरवाल के रहते मुझे दिमाग लगाने की जरूरत नहीं है !

पहली सीढ़ी पर पैर रखते ही—

तरवाल ने फिर से अपना आकार धारण कर लिया—

अब दूसरी सीढ़ी की जांच कर तरवाल !
हमको नागपाशा का काम शुरू होने से पहले अपना काम खत्म कर लेना है !
खतरा धीरे-धीरे वेदाचार्य और भारती की तरफ बढ़ता चला आ रहा था—
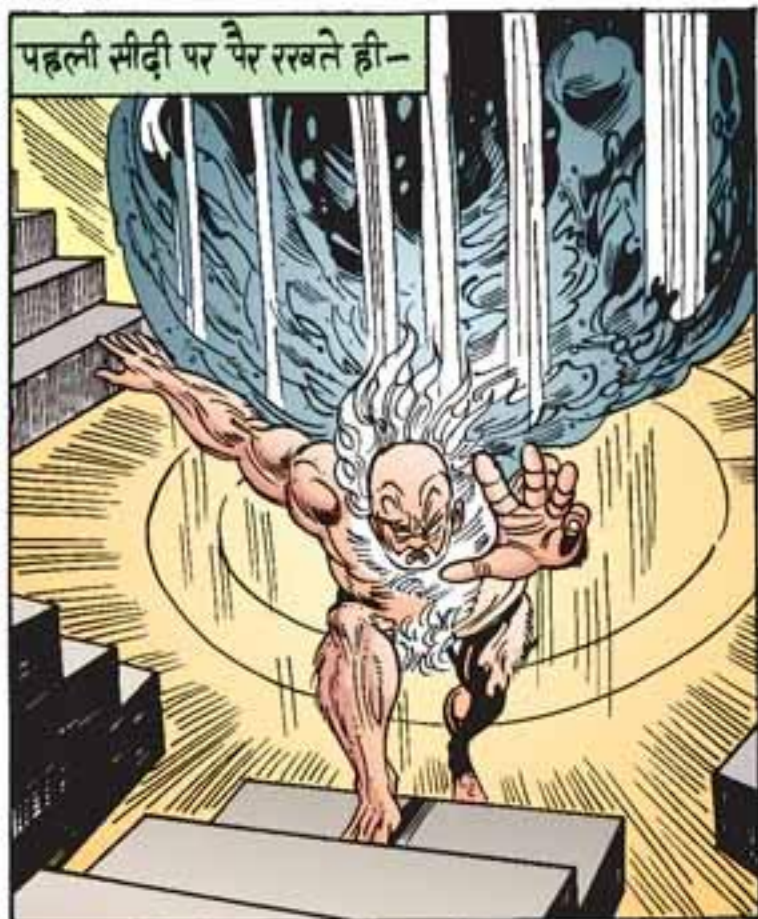
और नागराज वहां से दूर, अपने खजाने की प्रदर्शनी की निगरानी कर रहा था–
हम तुम्हारे विशाल खजाने में से कुछ बेशकीमती चीजें यहां पर रख पाए हैं नागराज! पूरा खजाना रख पाना तो संभव नहीं था। लेकिन यहां पर वे सारे रत्न और आभूषण मौजूद हैं, जो हमको अद्भुत लगे!
खासतौर पर ये तीन रत्न! हम सारी जांच के बावजूद भी यह पता नहीं लगा पाए कि ये रत्न आखिर हैं किस श्रेणी के! न तो ये हीरे हैं, न ही माणिक, पन्ना, रूबी!
विशेषज्ञ तो मैं भी नहीं हूं! लेकिन मेरा अनुमान है कि ये नागमणियां हैं, जो नागों के सिर पर ही डेवलप होती हैं!
अब आओ! प्रदर्शनी के उद्घाटन का समय हो गया है। बाहर भीड़ उमड़ पड़ी है, इस खजाने को देखने के लिए!
ओ हो! मीडिया वाले भी मौजूद हैं!
नागराज! क्या ये सच है कि ये खजाना तुम्हारा है?
क्या कीमत होगी इस खजाने की?

इस खजाने की कीमत...
... नागराज की मौत है!...
... अस्थिसूप के हाथों!
तड़ाक
नागपाशा का मणियों को हासिल करने का प्रयास शुरू हो गया था-
जब तक नागराज अस्थिसूप से लड़ेगा, तब तक मैं अन्दर रखी मणियों को हासिल कर लूंगा!

अस्थिसूप नागराज को कड़ी टक्कर दे रहा था-
HALL
ओह! इसके सर्प रूपी हाथ से नुकीली हड्डियां निकल रही हैं! जो मुझ- को इस होर्डिंग से ठोंक रही हैं!
इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करना होगा!
लेकिन-
आऽऽऽह! यह भी इच्छाधारी रूप में आकर मुझ पर वार कर रहा है!
यानी यह भी इच्छाधारी नाग है!
नागराज आजाद हुआ-
इच्छाधारी रूप धरना बेकार है! मुझे सर्प सेना का प्रयोग करना चाहिए!
नागराज, अस्थिसूप से उलझा हुआ था-

और उधर मौके का फायदा उठाकर नागपाशा, प्रदर्शनी में दाखिल हो चुका था-

हा हा हा! मिल गए! यही हैं वे तीन रत्न जो मुझको चाहिए! जो मुझको भूत वर्तमान और भविष्य, तीनों कालों का शासक बना देंगे!

वहां से दूर- वेदाचार्य पांडुलिपि सुनने में तल्लीन थे-
और पराजित राजा सुमेरनाथ ने तक्षकराज के इक्कीसवें वंशज राजा अक्षुराज को तीन मणियां प्रदान कीं! ये मणियां सुमेरनाथ को भगवान शंकर के एक रुद्र सेवक ने दी थीं! इन मणियों में भूत, वर्तमान और भविष्य का द्वार खोलने की शक्ति थी! और इन मणियों का धारक तीनों कालों पर राज कर सकता था! लेकिन ये द्वार तभी खुल सकते थे जब मणियों को तीन फनधारी सर्प त्रिफना की स्वर्ण मूर्ति के सिर पर स्थापित किया जाता!
इन मणियों को मैंने भी देखा था। लेकिन त्रिफना सर्प की मूर्ति को कभी नहीं देखा!

देखते कैसे दादाजी ? इन पांडुलिपि के अनुसार त्रिफना सर्प की मूर्ति किसी महात्मा कालदूत के पास थी! और उनसे वह मूर्ति बलपूर्वक हासिल कर पाना देवताओं तक के वश से बाहर की बात थी! इसीलिए वे मणियां खजाने में यूं ही पड़ी रहीं! वैसे भी अक्षुराज को तीनों कालों पर शासन करने में कोई रुचि नहीं थी...
कालदूत! कालदूत तो... खैर! आगे पढ़ो! फिर उसके बाद क्या हुआ ? अक्षुराज के बाद राजा कौन बना ?

अक्षुराज के बाद उनके पुत्र महाशक्तिशाली कुंडलीदेव राजसिंहासन पर बैठे! परन्तु जब उनका विवाह तय हुआ!
ये आवाज...
बस! अब ये पांडुलिपि हमको दे दो, वेदाचार्य! तुम अंधे हो गए!...
... लेकिन तुम्हारा पुस्तकों से लगाव कम नहीं हुआ!
गुरुदेव! नागपाशा के गुरू!
तुम अन्दर तक कैसे आ गए?

तेरी तारीफ करनी पड़ेगी वेदाचार्य! अंधा होकर भी देख सकता है। लेकिन यहां तक तेरे पास पहुंचकर मैंने यह सिद्ध कर दिया है कि मेरा यांत्रिक ज्ञान तेरे तिलिस्मी ज्ञान से ज्यादा श्रेष्ठ है!
तुम हमेशा ज्ञानों की तुलना में ही उलझे रहे गुरुदेव! तुमको मेरे प्रति तुम्हारी ईर्ष्या ही ले डूबी!
और इस ईर्ष्या ने तुमको इतना नीचे गिरा दिया कि तुमने राजपरिवार के दुश्मन नागपाशा तक का गुरु बनना कुबूल कर लिया!

और मैं क्या करता? तक्षकराज के दरबार में जो स्थान मेरा होना चाहिए था, उसे तूने हथिया लिया! इसीलिए मैं नागपाशा का गुरु बन गया! बस, बातें बहुत हो गईं! ला, पांडुलिपि मुझे दे!

ये पांडुलिपि किसी की अमानत है गुरुदेव! तुमको मैं सिर्फ अपना खेद दे सकता हूं!
तरवाल, छीन ले पांडुलिपि को!

वेदाचार्य ने फुर्ती से दीवार के एक उभरे हिस्से को दबाया, और दीवार में एक छेद नजर आने लगा, और-
घर्र्र्र
इससे पांडुलिपि निकाल सकता है तो निकाल ले तरवाल!

तरवाल ने बिना सोचे-समझे उस छेद में हाथ डाला-
और छेद में घूमता एक चक्र उसके हाथ का कीमा बनाने के साथ-साथ-
आ

तरवाल की आवश्यकता मुझे सिर्फ यहां तक पहुंचने के लिए थी। तुझसे पांडुलिपि लेने का काम तो मैं खुद भी कर सकता हूं। अब मैं तुझे इतना तड़पाऊंगा कि तू खुद-ब-खुद पांडुलिपि मेरे हवाले कर देगा!

और सेंट्रल हॉल के बाहर-
ध्वंसक सर्प बेकार साबित हो रहे हैं!
IBITION
इस पर मैंने अपने सारे सर्प आजमा लिए! नागफनी सर्प भी इसकी कड़ी हड्डियों को काटने में समय ले रहे हैं! इसकी इस अद्भुत शक्ति का आखिर राज क्या है?
मैं किसी भी दूसरे के शस्त्र से मारा नहीं जा सकता! और अपने पास मैं कोई अस्त्र-शस्त्र रखता ही नहीं हूं! इसीलिए मैं अमर हूं! अजेय हूं!
धम्मम
मुझे वरदान प्राप्त है नागराज!
लेकिन तू न तो अजेय है, और न ही अमर! तू मरेगा नागराज! जरूर मरेगा!

तभी पूरा वातावरण एक कड़कड़ाहट से गूंज उठा-
आहा ! यहां तो पहले से ही दंगल का मैदान बना हुआ है ! और पिटने वाला शख्स खुद नागराज है ! तू कौन है हड़ीले, यह तो मुझे पता नहीं, लेकिन तू वही कर रहा है जो मुझे करना था ! और इस काम में मेरा गुलाम यक्ष-राक्षस गरलगंट तेरी मदद करेगा !
नगीना !
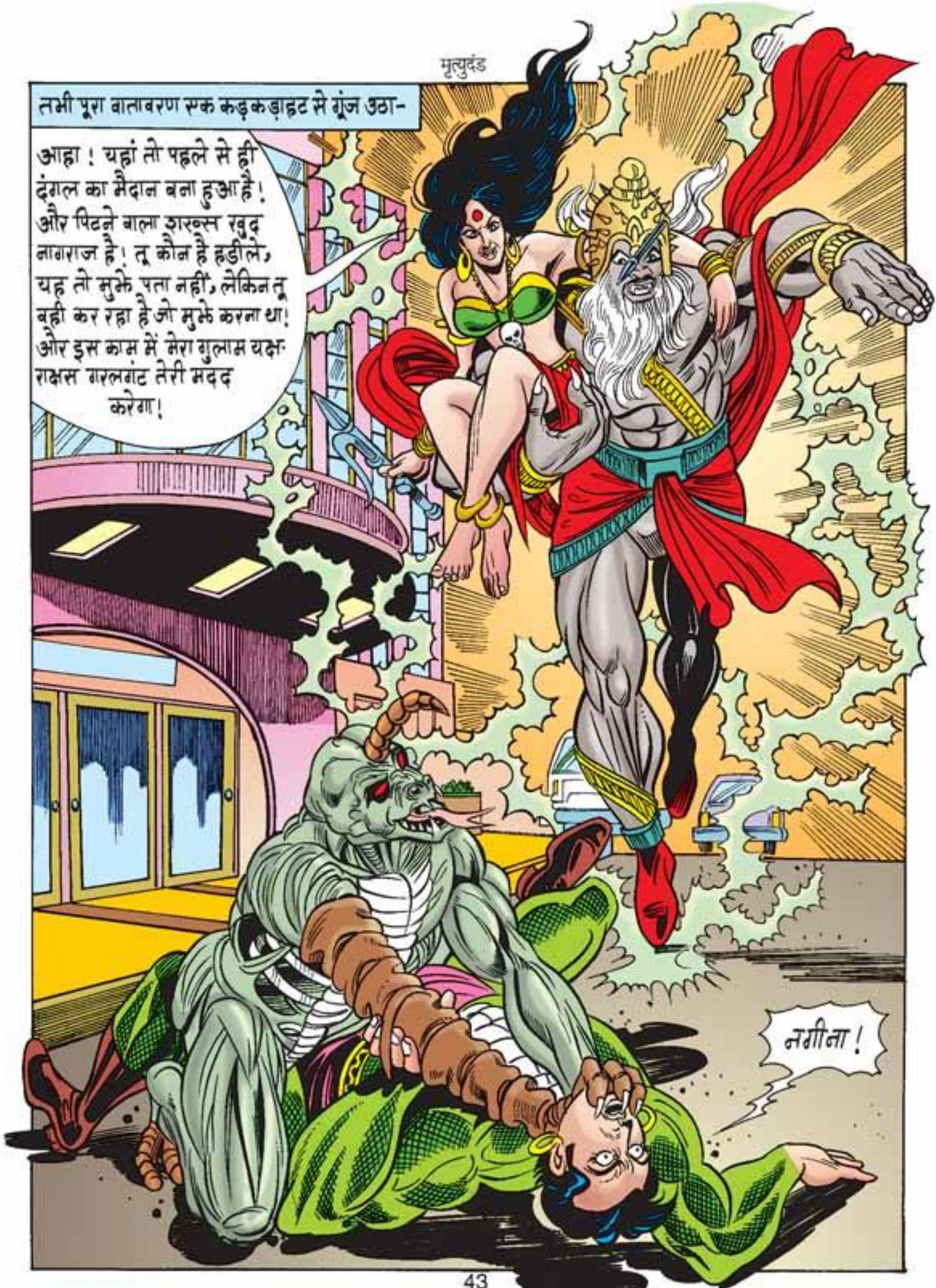
ओह! अगर ये अस्थिसूप, नगीना का भेजा हुआ नहीं है तो इसको भेजा किसने? यानी नगीना के अलावा कोई और भी इस खजाने के पीछे पड़ा है! पर वह हो कौन सकता है?

और ये यक्ष राक्षस गरलगंट तो तांत्रिकों के लिए देवता है! वरदान देता है इनको! इसको नगीना ने अपना दास कैसे बना लिया?

एकदम से बहुत सारे सवाल उठ खड़े हुए हैं! यह सारा षड्यंत्र खजाने को हासिल करने के लिए रचा जा रहा है! मुझे जल्दी से जल्दी इस लड़ाई को खत्म करके खजाने तक पहुंचना होगा!

लेकिन कैसे? एक तरफ से अस्थिसूप मुझ पर वार कर रहा है, और दूसरी तरफ से गरलगंट! और दोनों ही अजेय हैं! इन दोनों से पीछा छुड़ाऊं भी तो कैसे?

नागराज के सामने एक नहीं, बल्कि दो-दो मौतें खड़ी थीं—

और सेंट्रल हॉल के अन्दर- दो के सामने एक मौत खड़ी थी-
अमर मौत-
तू जितनी तंत्र-विद्या जानती है सौडांगी, उतनी तो मैं बचपन में सीखकर भूल भी चुका हूं!
असली तंत्र-वार क्या होता है...

... ये मैं तुझे दिखाता हूं!
सौडांगी!

तुझे सौडांगी पर घातक वार करने का दंड मैं तुझको बर्फ का पुतला बना कर दूंगा, नागपाश!
बर्फ में दफन होकर मैंने बरसों साधना की है शीतनाग...

... तेरी बर्फ की ये पतली सी पर्त तो मेरे एक सांस की गर्मी से ही पिघल जाएगी!

मैं तो तेरी शीत को झेल गया! अब तू मेरी ऊष्मा को भी झेलकर दिखा!
आऽऽऽह! ये... ये तंत्र अग्नि का गोला! ये मुझे झुलसा रहा है! मेरी शक्ति को क्षीण कर रहा है!
आऽऽऽह!
हा हा हा! ये केंचुए रखे थे नागराज ने पहरे पर! जो नागपाश के सामने दो पल भी टिक नहीं सके!
अब मुझे मणियां उठाने से कोई नहीं रोक सकता, कोई नहीं!
गलत, नागपाश! मणियों को मत छूना! क्योंकि वे मणियाँ...
...उस खजाने का हिस्सा हैं, जो अब मेरा है!
नगीना! तू इस खजाने का पीछा कब छोड़ेगी?
ये खजाना तेरा नहीं...
...नागपाश का है! नागपाश का!

खजाने हमेशा से उसी के होते आए हैं जो उस पर कब्जा कर ले! और आज नगीना खजाने पर कब्जा करने आई है!
और इसी वक्त-
तेरी दादाजी पर वार करने की जुर्रत कैसे हुई गुरुदेव?
इनकी हर चीख के बदले तू सौ बार चीखेगा!
तो अब दादा-पोती मिलकर मुझसे लड़ेंगे? यानी तुम दोनों एक साथ ही मरना चाहते हो?
ये यांत्रिक शक्ति और तिलिस्मी शक्ति का मुकाबला है गुरुदेव! जो जीतेगा, वही जिएगा!
ये तिलिस्म इंसान को पंगु बना देता है गुरुदेव! इसमें पहुंचने के बाद तू एक जिंदा लाश बनकर रह जाएगा! तू बोलेगा, सुनेगा, देखेगा, लेकिन कुछ कर नहीं पाएगा!

और गुरुदेव के साथ-साथ, भारती और वेदाचार्य के शरीर भी एक 'प्रकाश-सुरंग' में खिंचते चले गए-

और फिर- गुरुदेव की गुप्त प्रयोगशाला में-

यह क्या गुरुदेव? आप पांडुलिपि लाने के बजाए वेदाचार्य को ही ले आए!
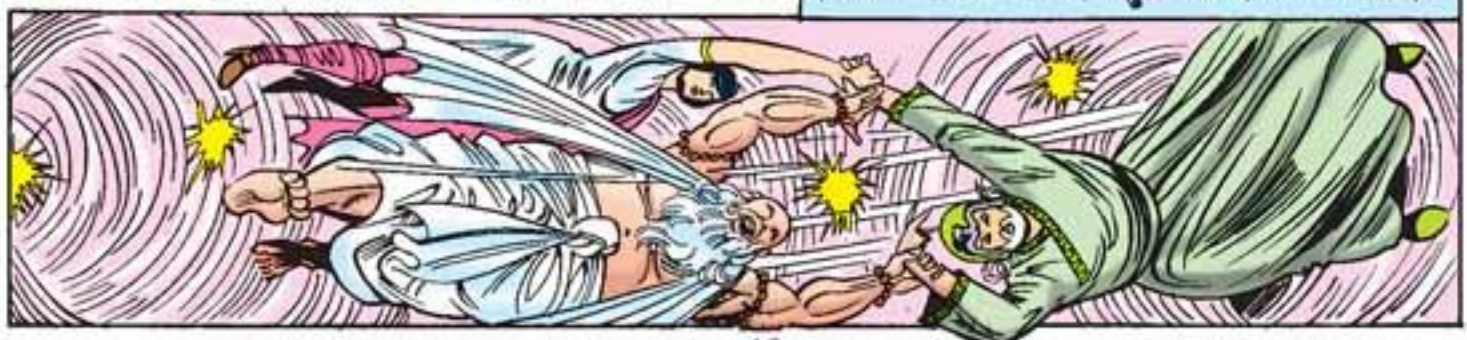
पांडुलिपि इसके दिमाग में है, केंटुकी! इसीलिए जब मैं पांडुलिपि हासिल न कर सका तो इसको ले आया!

और इसकी पोती भारती को भी!

नागपाशा की क्या खबर है?

वे महानगर में खजाना प्राप्त करने में संलग्न हैं! अभी तक उन्होंने कोई मदद नहीं मांगी है। लेकिन मैं उनसे संपर्क बनाए हुए हूं!

नागपाशा को तो नहीं, लेकिन नागराज को मदद की जरूरत अवश्य थी-

अभी तक तो मैंने बड़ी मुश्किल से अपने आपको बचा रखा है! अगर इन दोनों में से मैं किसी भी एक को रास्ते से हटा सकूं तो शायद दूसरे को भी हराने का रास्ता सोच सकूंगा! ऐसे तो कुछ भी सोचने का मौका नहीं मिल रहा है!
तड़ाक
गरलगंट को हराना असंभव है! अस्थिसृप मेरे किसी हथियार से मर नहीं सकता! और इसके पास हथियार है ही नहीं...
...एक रास्ता सूझ रहा है! अस्थिसृप के पास एक हथियार तो है, इसका सींग! जानवर अपने सींग का प्रयोग हथियार की तरह ही करते हैं!
सींग, अस्थिसृप के पेट में धंसता चला गया-
घचाक
आऽऽऽह
तड़पता अस्थिसृप जमीन पर आ गिरा-
और एक चीख के साथ-
अब मेरा मुकाबला सिर्फ गरलगंट से है! और यह मुकाबला मुझे जल्दी से जल्दी जीतना है!...
...ताकि मैं नगीना को खजाना ले जाने से रोक सकूं!

नागराज को यह आभास नहीं था कि नगीना को किसी और शख्स ने रोक कर रखा हुआ है-
अमर नागपाशा ने-
तू मुझसे उलझकर अपनी जिन्दगी की आखिरी गलती कर रही है नगीना!
ओफ़! मेरे प्रहार करने से पहले ही इसने अंकुश को मेरे हाथों से गिरा दिया!
नगीना कभी गलती नहीं करती नागपाशा! मैं जो भी करती हूं वह अपने-आप सही हो जाता है।
यहां पर मौजूद विभिन्न रत्न और मणियों के प्रभाव से मेरी तंत्र मुंड शक्ति बढ़ रही है। और इतनी शक्ति तुझे नष्ट करने के लिए काफी है!
तू मुझे मारेगी? मुझे! अरे, मैं अमर हूं। मुझे कोई मार नहीं सकता! मैंने अमृत पिया हुआ है! अमृत!
वह तो रावण ने भी पिया था! और अमृत उसकी नाभि में जाकर इकट्ठा हो गया था! तेरे शरीर में भी अमृत कहीं न कहीं पर इकट्ठा है!
और नगीना अपने वारों से उस जगह का पता लगाकर तेरे शरीर के अमृत को सुखा देगी!
यह सच कह रही है! ये ऐसा कर सकती है!
मुझे केंदुकी की मदद लेनी होगी!
केंदुकी!

नागपाशा की स्थिति पर नजर रख रहे केंदुकी को तुरंत पता चल गया कि नागपाशा को किस चीज की जरूरत थी-
अद्भुत यांत्रिक तरंगें नागपाशा की तरफ दौड़ चलीं-
...तंत्र मुंड से बचने का यंत्र...
और नागपाशा के शरीर पर एक कवच चढ़ने लगा-
हा हा हा! देख, नगीना! ये 'प्रस्तर कवच' है! तेरा कोई भी तंत्र वार इसे भेद कर मेरे शरीर तक नहीं पहुंच सकता!
लेकिन इसके प्रहार तेरी सारी हड्डियां तोड़ सकते हैं!
आऽऽऽह! अद्भुत हैं नागपाशा की शक्तियां! कोई चाल चलनी होगी! वर्ना नागराज का क्या भरोसा? हो सकता है कि वह गरलगंट को भी हराकर यहां पर आ धमके!
अब देख नागपाशा के प्रस्तर चक्र का कमाल!
नगीना को संभलने का मौका नहीं मिला-
नगीना की हड्डियां तोड़ना इतना आसान नहीं है, नागपाशा! अब देख, मैं तेरा क्या हाल करती हूं!
हा हा हा! कर लिया तूने अपना वार?
प्रस्तर चक्र उसके शरीर को काटता चला गया-

हा हा हा! अपने तंत्र ज्ञान पर अभिमान करके नागपाशा से भिड़ने चली आई थी मूर्ख! लेकिन खुद ही काल के गाल में समा गई। अब मुझे इस भारी प्रस्तर कवच की आवश्यकता नहीं है! अब मैं फटाफट इन तीन रत्नों को उठाऊं, और गुरुदेव की मदद से यहां से अदृश्य हो जाऊं!

तुझे अदृश्य होना है तो हो ले, नागपाशा...

... लेकिन मेरे माल को अपने साथ अदृश्य मत कर!

अब तू मेरा गुलाम है, नागपाशा! तूने जिसको काटा था, वह मेरा तांत्रिक प्रति-रूप था। मैं तो अपना अंकुश उठाने चली गई थी। अब खजाना मैं बटोरूंगी, और इस बीच अगर तेरा भतीजा नागराज आ गया तो उसे तू रोकेगा!

लगभग तुरन्त ही-

अरे! नागपाशा गायब हो रहा है! यह तो मेरा गुलाम था! मेरे आदेश के बगैर गायब हो ही नहीं सकता था। कोई और इसे गायब कर रहा है। यानी इसके साथी भी हैं! मुझे अपना काम जल्दी से जल्दी पूरा करके यहां से निकल जाना चाहिए!

वर्ना अगर अब नागराज यहां पर आ गया तो फिर मुझे कौन बचाएगा?

नागराज के फिलहाल, सेंट्रल हॉल के अंदर जा पाने के आसार नजर नहीं आ रहे थे–
ओफ़! इसके अंदर मेरे दुश्मन कालजयी का विष है, जो मुझे विचलित कर रहा है! इसको रोकना होगा!...
...रोकना होगा!
आ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ह!
गरलगंट तो शक्ति में देव कालजयी के बराबर का है! मैं इसको हराऊं भी तो कैसे?
अब मैं स्वामिनी की इच्छा के अनुसार तुझे मौत दूंगा, नागराज!
एक भयानक मौत!

इसी वक्त- नागद्वीप पर-
उठ, और मुझे प्रणाम कर कालदूत!
किसने हमारी समाधि को भंग करने का साहस किया है?
हमने कालदूत! नागद्वीप की साम्राज्ञी ने!
नगीना! तूने साहस कैसे किया नागद्वीप पर कदम रखने का? और किस सपने में तू नागद्वीप की साम्राज्ञी बन गई?
किसने दी तुझे यह पदवी?

यह पदवी मुझे तुम्हारे अलावा और कौन दे सकता है, कालदूत! नागद्वीप के सर्वे-सर्वा तो तुम ही हो! और आज यह पदवी तुम ही मुझे दोगे!

हम तुझे एक पदवी देंगे तो जरूर, नगीना! लेकिन 'साम्राज्ञी' की नहीं, 'दिवंगत' की!

दिवंगत नगीना! यानी वह नगीना जो मृत्यु को प्राप्त हो गई!

अपनी शक्ति पर अभिमान मत कर कालदूत! अब तेरे सामने कोई मामूली नाग तांत्रिका नहीं है। बल्कि उस खजाने की स्वामिनी नगीना है, जिस खजाने में अद्भुत रत्न और मणियां शामिल हैं! और ये रत्न मेरी तांत्रिक शक्ति को कई गुना बढ़ा रहे हैं! साथ ही साथ बेशुमार स्वर्ण मुझे शक्ति दे रहा है!

कड़ड़ड़क

तू सत्य कह रही है नगीना! बिना शक्ति प्राप्त किए तू हमारे सामने आने का साहस नहीं करती। लेकिन जितना खजाना तू लेकर आई है, वह हमारे नागद्वीप के खजाने का एक प्रतिशत भी नहीं है! एक मामूली खजाना तुझे कालदूत से बचने की शक्ति नहीं दे सकता!

अब तू मेरा गुलाम है, कालदूत!

हां, स्वामिनी! हम आपके गुलाम हैं!

अब नागद्वीप की सारी प्रजा को बुला, और उनके सामने मुझे यहां की साम्राज्ञी नियुक्त कर!

और साथ ही साथ नागद्वीप के खजाने की चाबी भी मुझे सौंप दे!

आदेश का पालन होगा स्वामिनी!

नगीना अपने मकसद में कामयाब हो गई थी-

उसने खज़ाना भी नागराज से छीन लिया था, और शायद उसकी जान भी-
आऽऽऽह! गरलगंट ने मुझे अजीबो-गरीब 'तड़ित जाल' में फंसा दिया है। इसके अंदर न तो मैं इच्छाधारी कणों में बदल पा रहा हूं, और न ही मेरे सर्प मेरे शरीर से बाहर आ पा रहे हैं। ऐसा शायद मेरे चारों तरफ फैले विद्युत क्षेत्र के कारण हो रहा है!
अब यह गोला सिकुड़ता जा रहा है। और जैसे ही इसका स्पर्श मेरे शरीर से होगा, मैं राख के ढेर में बदल जाऊंगा!
मौत नागराज पर शिकंजा कस रही है-
नगीना, नागद्वीप पर अपना शिकंजा कस चुकी है-
नागपाशा और गुरुदेव ने तीनों मणियां लेने की कसम खा ली है-
यानी एक भीषण युद्ध की तैयारी हो चुकी है। और इस युद्ध का युद्ध क्षेत्र बनेगा ... नागद्वीप!

क्रमशः

ये ब्रह्माण्ड के सर्वाधिक शक्तिशाली एलियन्स मेरे बंधुआ मजदूर हैं। इन्हें देखकर तू समझ सकता है परमाणु...
...कि यह है पृथ्वी का सबसे खतरनाक और रहस्यमय स्थान...
मूल्य: 20 -
30 अप्रैल 2006 से उपलब्ध
एरिया-51
राज कॉमिक में वण्डरमैन परमाणु का रोमांचक कॉमिक विशेषांक!!